प्र०टी
१०

ष तेजेतेनास्तिकजाणवो ॥ २३ श्लोक कोवाऽस्तिकोयोऽखिललोककर्त्तुर्भर्त्तुः समग्रस्यच दिव्य
मूर्त्तेः तस्याऽवतारानुभजतिहृदिध्यानतत्परः कः विश्वासयुक्तः सदाव ॥ २४ अर्थ हे गुरो आस्तिक तेकुंण
जाणवो एप्रश्न छे ॥ ८० उत्तर ॥ सर्वलोकनाकर्त्ताने सर्वजीवमात्रनाकर्मफलप्रदाताने दिव्य छे मूर्त्तिने
जेमनि एवाजे भगवान तेनाजे दिव्य अवतार तेमन भजतो होयने तेमना वचनने विषे विश्वासयुक्त एवोजे
होयते आस्तिकजाणवो ॥ २४ श्लोक कोदुर्लभः श्रीहरिरेव लोके किं जन्ममूलं किल वासनाया ॥ का
वासनाया खिलकर्महेतुस्तथाच नानाविधभोगवाछे ॥ २५ अर्थ ॥ हे गुरो लोकने विषे दुर्लभ ते कुंण छे
एप्रश्न छे ॥ ७८ उत्तर श्रीकृष्ण परमात्मा जे ते दुर्लभ छे ॥ हे गुरो वासना ते केने कहिये एप्रश्न छे ॥ ८० उत्त
॥ सर्वकर्मने करावनारि एवि ने नानाप्रकारना स्त्री आदिक जे भोग तेनि इच्छाने करावनारि एवि जे हृद
यने विषे कर्मनं थियते जे ते वासना जाणवि ॥ २५ श्लोक ॥ किं कर्मकार्यं कथितं लोकविदैः श्रीकृष्णसंप्री
तिकरं नरैः स्तत ॥ सतां मतः कोहि परोपकारः शिष्यश्च कः सद्गुरुवाक्यनिष्ठः ॥ २६ श्लोक हे गुरो
मोटाक विते मरो मनुष्यने करवा जोग्य कर्म ते कुंण कहे छे एप्रश्न छे ॥ ८१ उत्तर जेकर्म करिने श्री

कृष्ण परमात्मा प्रसन्न थाय ते करवा जोग्य कहुं ॥ हे गुरो सत्पुरुषनो स्यो मत छे एप्रश्न छे ॥ ८२ उत्तर जी
वुंने भगवान सन्मुख करवाने आलोकने विषे तथा परलोकने विषे जीवनुं रुडुं थाय एवुं जे केवुं ते रूप
परोपकार ते सत्पुरुषनो मत छे ॥ हे गुरो शिष्य ते केने कहिये एप्रश्न छे ॥ ८३ ॥ उत्तर ॥ एकांतिक धर्मने
विषे कुंशल एवा जे सद्गुरु ते मनि शिक्षाने अनुसारे वर्त्ते तेने शिष्य कहिये ॥ २६ श्लोक ॥ दृष्टं तस्यकी
वाकथिता मुनिंद्रैः कांताकटाक्षीनं च वंचितो यः विश्वास मनियान चकामिनियुं सां नारि पिशाचि
विषेवदख्ख ॥ २७ अर्थ ॥ हे गुरो चतुर पुरुष ते कुंण छे एप्रश्न छे ॥ ८४ उत्तर ॥ स्त्रीना कटाक्षे करि
ने जे मोहने न पाम्यो ते पुरुष जे ते मुनि तेमणे चतुर कह्यो छे ॥ हे गुरो पुरुषने विश्वास करवा जोग्य नहि
एवि ते कुंण कहि छे एप्रश्न छे ॥ ८५ उत्तर ॥ विषयि निर्वेलि तुमने पिशाचि तुल्य एवि जे नारि ते जेने वि
श्वास करवा जोग्य नथि ॥ २७ श्लोक देहे च तिर्यक्सपिकान् जिर्णोपि पुंसां धनाशा किल जीविताशा ॥
कोलाभहिनो विमुखो हरेर्यो ना भौक्तिको याति हि दूरे खामिनः ॥ २८ अर्थ ॥ हे गुरो मनुष्य जे तेमने देह
जीर्ण थया छे सते पण जीवतां न थइ एवि ते कुंण छे एप्रश्न छे ॥ ८६ ॥ उत्तर धननि आशाने जीववानि आशा

प्र०ग्री ते कारे यत्नी णो थाति नथि ॥ हे गुरो लाभहिन ते कुंणा छ एप्रस्ने छे ॥ ९७ उतर ॥ हरि थकि विमुख जे होय ते
११ लाभहिन जांणवो ॥ हे गुरो लाभ ते कियो जांणवो एप्रश्न छे ॥ ९८ उतर हरि नि जे प्राप्ति ते जे ते लाभ जांणा
वो ॥ ३९ श्लोक कौ का चास्ति सम्यग्गुणदोषदृष्टिः खिन्नो हि का चाऽमयलोऽक्षमाया ॥ किं काममूलं
विषयानुं मा विसंकल्पणवे ति विनिश्चितं तत ॥ ३९ अर्थ हे गुरो प्रमुते केने कहिये एप्रश्न छे ॥ ९९
उतर परगुणने विषे दोष देखवा तेने प्रमृषा कहिये ॥ हे गुरो ईर्ष्या ते केने कहिये प्रश्न छे ॥ १०० उतर
विज्ञा निजे मोटाप्प तेने देखि न रखमाय तेने ईर्ष्या कहिये ॥ हे गुरो कामनुमूल ते कुंणा छे एप्रश्न छे
१०१ उतर मनने विषे पंच विषयना अनुभवनो करनारो णवो जे संकल्प तेज कामनुं मूल छे ॥ ३९
श्लोक ॥ मृतोऽस्ति कोऽजन्म पुनर्न यस्य जातोऽस्ति को यस्य मृतिः पुनर्न किं जन्मसाफल्यमनात्मनि
ष्ठां निर्धूय सम्यक् करणं हरेर्यत ॥ ७० अर्थ ॥ हे गुरो मरि गयो ते कुंणा जांणवो एप्रश्न छे ॥ १०२ उतर
जेनो जन्म फरिने कोइ रे पन थाय ते मरि गयो जांणवो ॥ हे गुरो जन्म्यो ते कुंणा जांणवो एप्रश्न छे ॥ १०३
जेनुं मरण फरिने कोइ रे पन थाय ते ज न्म्यो जांणवो ॥ हे गुरो जन्मनुं सफलपणुं ते स्युं छे एप्रश्न छे ॥ १०४

देहने विषे जे आत्मबुद्धि तेनो सर्व प्रकारे त्याग करिने अने सत्तारूप णवो जे जीवात्मा तेने पोतानुं स्वरू
प मानिने परमेश्वरनो आश्रय करवो ए जन्मनुं सफलपणुं छे ॥ ७० श्लोक कुत्रागमधीः कोऽवि
वेकी कथं गानं विज्ञाय मिथ्या सह हरिं भजेद्यः विना हरिं योऽस्ति यत्र बुद्धिः कस्तां कमिष्टे न्मुसल
त्वागमधीः क ॥ ७१ अर्थ ॥ हे गुरो दंभना आग्रम सरखि कोण छे बुद्धि ते जे नि णवी ते कुंणा पुरुष जां
णवो एप्रश्न छे ॥ १०५ उतर पाताललोक थि करिने मूल प्रकृति सुधि पुरुषना लोक पर्यंत सर्व
लोकना वैभवने मिथ्या जांणिने जे हरिने भजे तेने दंभना आग्रम सरखि तिक्ष्ण बुद्धिवालो जांणवो
॥ हे गुरो मुसलना अग्रभाग सरखि स्थुल बुद्धिवालो ते कियो जांणवो एप्रश्न छे ॥ १०६ उतर भग
वान विना पाताल थि जेने प्रकृति पुरुष पर्यंतना आवंत सुखने विषे सत्य मानि बुद्धि करिने सुखने
लेई छे छे तेने मुसलना अग्र सरखि स्थुल बुद्धिवालो जांणवो ॥ ७१ श्लोक के संति सन्ता विषयागरो
ये श्रीकृष्णसंबंधिन एवननामे ॥ शब्दादयस्ते सुखदा जन्मनां जन्मादि दुःखानि हरंति चैते ॥ ७२ उत
॥ हे गुरो सत्व विषय ते कियां जांणवा एप्रश्न छे ॥ १०७ उतर श्रीकृष्ण भगवान संबंधि जे शब्दादि

कपंच विषयते मसछेने जीवनात्तबामरणादिक दुःखनाहरनाराछे अजोकीकमसुखनाआपनाराछेप
णविज्ञाकोयएवानथि॥ ७२ श्लोक केमेंनिचामत्हिविषयास्तदेमेलस्धमगाम्या॥ नुपधर्मतुष्टाःपाया
न्विताःपापफलात्र्रमसभोगाः॥ फ्रूरामदयलात्रानाये॥ ७३ श्लोकः हेगुरोअसत विषयतेकिया
जाणवाएमप्रश्नछे॥ १०६ उत्तर॥ भगवाननासंबंधेरहीतएवानेअधर्मेकरिनेपमायएवानेयार्येजुक्र
एवानेपापरूपछेफलतेजे मनुंएवानेमुरानेमांसनेताडिआदिकजेअप्रायारप्रकारनंम छतेमतोजु
क्तएवानेनाशवंतएवातेभोगातेजेतेअसत विषयजाणवा॥ ७३ श्लोक॥ दोषाप्तकबुद्धिहराद्धिसे
तिलेषुप्रवृत्ति विषयेष्वसत्सं॥ क्रोधोपराधोमहत्तांजनानांशोको भसतासेवनमित्यमेते॥ ७७॥
हेगुरोबुद्धिनेहरिलेएवादोषतेकियाछेएमप्रश्नछे॥ १०७ उत्तर॥ असतएवाजेपंचविषयतेमने
भोगववातथा क्रोध करवोतथासतपुरुषनोअपराधकरवोतथाशोककरवोतथाअसतपुरुष
नुंसेवनकरवुंएजेपंचदोषतेजेतेबुद्धिनाहरनाराछे॥ ७४ श्लोक प्रज्ञाप्रकाशागाविशदागुणाःके
धर्मेत्मज्ञैकांतिकभक्तसंगःसच्छास्त्रसेवाचजितेंद्रियत्वमहिंसधर्माचरतासदेते॥ ७५॥ अर्थः॥

हेगुरोबुद्धिनेप्रकाशनाकरनाराएवाशुद्ध गुणतेकियाछेएमप्रश्नछे॥ १०८॥ उत्तर॥ धर्मदेवनापुत्रए
वा[illegible]जेश्रीहरिकृसभगवानतेमनाजेएकांतिकभक्ततेमनोसमागमनथा चास्वेदेथ्यासमत्र॥ श्रीमद्भा
गवत॥ भगवद्गीताएआदिकजेसतशास्त्रतेमनेसांभलवांनेविचारवातथाजितेंद्रियपणोवर्तवुंतथा
अहिंसाधर्मनेविषेवरतवुंएच्यारगुणतेतेबुद्धिनाप्रकाशककरेछे॥ ७५ श्लोकः सभक्तिधर्मोस्ति चकुं
त्रयेषेषोसद्देशमुख्याःखलुसंतितेषु॥ कचाभसधर्मोभ्युतेष्वसप्तदेशादीकेछेसदास्थितोस्ती॥ ७६
हेगुराभक्तियेसहितएवोजेधर्मतेकियास्थानेविषेरहेछेएमप्रश्नछे॥ १११ उत्तर सतदेश॥ सतकाल
सतक्रिया॥ सतसंगएवोजेधर्मतेकियास्थानकनेविषे-निमततशास्त्र॥ सतमंत्र॥ सतध्यानएअष्टए
वांजेआठस्थानकतेनेविषेभक्तिसहितधर्मजेतेरहेछे॥ हेगुरोअधर्मतेकियास्थानकनेविषेरहेछे
एमप्रश्नछे॥ ११२ उत्तर असतदेश॥ असतकाल॥ असतक्रियाआदिकजेआठअसतस्थानकतेने
विषेअधर्मजेतेरहेछे॥ ७६ श्लोकः सद्देशकःकोभगवत्ज्ञनायेएकांतिकास्तेविचरंतियत्र॥
श्रीकृष्णपादांकितभुरसोसगंगादितिर्थानिपशानितस्य॥ ७७ अर्थ॥ हेगुरोसतदेशतेकेनेकहियेए

प्रश्न छे ॥ ११२ उत्तर स्वधर्म तथा ज्ञान तथा वैराग्य तथा माहात्म्ये भक्ति ए च्यारे जे गुण ते मणी युक्त एवा जे श्री
हरिकृष्णना एकांतिक भक्तजन ते जे ते जे देशने विषे विचरता होय एवो जे देश तथा श्रीहरिकृष्ण महा
राजना चरणारविंदे करीने अंकित एवो जे देश तथा गंगा आदिक जे तीर्थ तथा श्रीकृष्ण भगवानना मं
दिर संबंधि समिप एवो जे देश ए आदिक भगवानने भगवानना एकांतिक जे भक्त ते मना संबंधने
पाम्यो एवो जे देश ते सर्वे देश जे ते सत देश जाणवो ॥ ७७ श्लोक ॥ कश्चास्ति सद्देशः कृष्णधर्मी श्रीकृ
ष्णभक्तिर्विषयः स यत्र ॥ हिंसा यत्रेषां चपलाश्चनानि सुरादिपानानि भवंति यत्र ॥ ७८ अर्थ ॥ हे गुरो अ
सत देश ते कियो जाणवो ए प्रश्न छे ॥ ११३ ॥ उत्तर च्यार वेद तथा श्रीमद्भागवतादिक पुराण तथा या
ज्ञवल्क्य ऋषिनि स्मृति आदिक जे बीजियु स्मृतियु ए सर्वने विषे कह्या एवा जे वर्णाश्रमना धर्म ते थ
कि अवळा एवा जे पाखंड धर्म ते मना आश्रे चरणना करनारा जे देशमां रहेता होय एवो जे देश ते अस
त देश जाणवो तथा श्रीकृष्ण भगवानना ने तेमनि भक्तिना द्रोहि एवा जे पुरुष ते जे देशमां रहेता हो
य एवो जे देश ते असत देश जाणवो तथा जे देशने विषे जीवुंनि हिंसा थ्याति होयने मांसना खानारा

रहेता होयने त्रण प्रकारनि जे सुराने अणथ प्रकारनुं मद्य तेमना पिनारा रहेता होय एवो जे देश ते अ
सत देश जाणवो ॥ ७९ श्लोक कः सत्कालो हरिवासरादि जन्मोत्सवाद्यश्चादरेः सत्समस्तः कोऽसत्का
लो मलिनानृबुद्धयो यत्रासौ धर्मो न नुवर्त्तते च ॥ ७९ अर्थ ॥ हे गुरो सतकाळ ते कियो जाणवो ए प्रश्न
छे ॥ ११५ उत्तर रामनवमि तथा जन्माष्टमि ए आदिक जे भगवानना जन्म गुरु संबंधि द्व सत तथा चोविस
एकादशियुं ए आदिक जे काळ ते सत काळ जाणवो ॥ हे गुरो असत काळ ते कियो जाणवो ए प्रश्न
छे ॥ ११६ उत्तर ॥ जे काळ ते विषे मनुष्यनि मतियुं मलिन वर्त्ततियुं होयने केवळ अधर्म तज सर्वे प्रका
रवर्त्ततो होय एवो जे काळ ते असत काळ जाणवो ॥ ७९ श्लोक ॥ का सत्क्रिया प्रीतिकरी हरेर्या सु
खावहा चात्र परत्र चैव ॥ असत्क्रिया का निजदुःखदाया सर्वत्र चाऽप्रीतिकरी हरेः सा ॥ ८० अर्थ
हे गुरो सत क्रिया ते केई जाणवि ए प्रश्न छे ॥ ११७ उत्तर ॥ आ लोकने विषे ने परलोकने विषे पोताने
सुखनि करनारि एवि ने स्वधर्म ज्ञान ने वैराग्य ए त्रण एणे करीने युक्त एवि जे परमेश्वर नि नव प्रका
रनि भक्ति ते भक्ति रूप एवि भगवानने प्रसन्न करनारि जे क्रिया ते सत क्रिया जाणवि ॥ हे गुरो अ सत

प्र०उ०टी०
१७

क्रियातेकेईजांणवीएप्रश्नछे ॥ ११८ उत्तर ॥ आलोकनेविषेनेपरलोकनेविषेपोतानुंभूंडुंकरेएवीनेजे
लोकरिनेभगवानकुराजीथायएवीजेक्रियातेक्रियाजेतेअसतक्रियाजांणवी ॥ ५० ॥ श्लोकः सत्संग
तिःकाचहरौहरेर्वाभक्तेषुसद्धर्मयुतेषुयोगः कोवाकुसंगःपुरुषेषुसत्सुसद्धर्महीनेषुसमागमोयः
५१ अर्थ हेगुरोसतसंगतितेकेईजांणवीएप्रश्नछे ॥ ११९ उत्तर ॥ हरिनेविषेतथाधर्मज्ञाननेवैराग्य
आदिगुणेकरिनेजुक्तएवाजेहरिभक्ततेमनेविषेप्रीतियेकरिनेजेप्रसंगतेजेतेसतसंगतिजांणवी
हेगुरोकुसंगतेकियोजांणवोएप्रश्नछे ॥ १२० उत्तर ॥ सतधर्मेरहितजेअसतपुरुषतेमनेविषजेप्रसं एवो
गतेजेतेकुसंगजांणवो ॥ ५१ श्लोक ॥ किंसत्शास्त्रंहरिदिव्यमूर्तिंधर्मादिभक्तेःप्रतिपादकंच ॥ अस
तशास्त्रंकिमुकृष्णधर्मैर्युक्तंचयन्मिलतिखंडितोतेन ५२ अर्थ हेगुरोसतशास्त्रतेकुंणजांण
वुंएप्रश्नछे ॥ १२१ उत्तर ॥ श्रीहरिकृष्णनिजेदिव्यएवीमूर्तितेनुंप्रतिपादनकरनारुंएवुंजेशास्त्रते
धर्मज्ञानवैराग्यादिकगुणजुक्तएवाजेभगवाननिभक्तितेनुंप्रतिपादनकरनारुंएवुंजेशास्त्रतेजे
तेसतशास्त्रजांणवुं ॥ हेगुरोअसतशास्त्रतेकुंणजांणवुंएप्रश्नछे ॥ १२२ उत्तर ॥ जेशास्त्रनेविषेश्री

कृष्णभगवाननुंधर्मनुंजुक्तियेकरिनेखंडनकर्युंहोयएवुंजेशास्त्रतेअसतशास्त्रजांणवुं ॥ ५२ ॥
श्लोक ॥ दिक्षाममिकारमणी । यवेषाधर्माःखिलावैष्णवचिंन्हयुक्ता ॥ काचाऽसतीप्रियाविकराजवे
षात्वगांनिदावैष्णवतानिषिद्धा ॥ ५३ ॥ अर्थ हेगुरोसतदिक्षातेकेईजांणवीएप्रश्नछे ॥ १२३ ॥ उत्तर
जेदिक्षायेकरिनेपोतानोजेदेहतेअतिशेरुपाळोलागेएवीदीप्यनेअहिंसाआदिकजेधर्मतेणेकरी
नेजुक्तहोयनेकंठीपुंडुंतथातुलसीनीवेडिकंठीतथाशंखचक्रगदापद्मएआदिकजेधर्मनेतेणे
वैष्णवनांचिन्हतेणेकरिनेजुक्तएवीजदिक्षातेसतदिक्षाजांणवी ॥ हेगुरोअसतदिक्षातेकेईजांण
वीएप्रश्नछे ॥ १२४ उत्तर ॥ जेदिक्षायेकरिनेपोतानादेहनोजेवेषतेमुंडीकुरूपथैजायएवीनेजेदिक्षा
येकरिनेशांतिलोथायनहिनेउद्वेगथायएवीनेविष्णुनाचिंन्हेरहितएवीजेदिक्षातेअसतदि
क्षाजांणवी ॥ ५३ ॥ श्लोक ॥ कःसत्समंत्रोमतिशांतिकारियःसर्वथासात्विकदेववाचि ॥ काऽसत्समं
त्रोननुदेवतानांयोवाचकोराजसतामसानाम् ॥ ५४ ॥ अर्थ ॥ हेगुरोसतमंत्रतेकियोजांणवोएप्र
१२५ उत्तर मंत्रनोजेभणनारोतेनिबुद्धिनेशांतिनोकरनारोएवोनेसत्वगुणीएवाजेविष्णुदेवते

प्रश्नो
१५

मनो केनौ रो। एवोजे मंत्र तेजेते सत मंत्र जांणवो॥ हे गुरो अ सत मंत्र ते कियो जांणवो। ए प्रश्न छे॥ १२६
उत्तर। गुणिने त मोगुणा। एवा जे देव ते मनो केना रो। एवोजे मंत्र ते तेते अ सत मंत्र जांणवो॥ ५६॥ श्लोक॥
॥ ध्यानं च सत्किं हरिहरस्य मूर्त्ति ध्यानं मंत्र सत्किं विपरितमस्मात्॥ शास्त्रं च किं नाम च यत्र सिंतिर्ध
धर्मार्थकामान विमोक्षमेतान्॥ ५५॥ अर्थ॥ हे गुरो सत ध्यान ते कुंण जांणवुं। ए प्रश्न छे॥ १२७ उत्तर
हरिहरस्य महाराजनि मूर्त्तिनुं जे ध्यान ते ध्यान जे ते सत ध्यान जांणवुं॥ हे गुरो अ सत ध्यान ते कुंण जांणवुं
ए प्रश्न छे॥ १२८ उत्तर॥ आ कह्युं एथि विपरित वुं जे ध्यान ते जे ते अ सत ध्यान तेने कुंण जांणवुं। ए प्रश्न
हे गुरो शास्त्र ते कुंण जांणवुं। ए प्रश्न छे॥ १२९ उत्तर॥ धर्म अर्थ काम ने मोक्ष ए च्यार पदार्थ नो बोध
जे करतुं होय ते शास्त्र जांणवुं॥ ५५॥ श्लोक॥ समि छेत्र येन नितो चरह किंवा धेयं च जनेम ते
न॥ सदृशा सत्का जमुख वानी नी सं संसे व नियानि श्रु भामियानि॥ ५६॥ अर्थ॥ हे गुरो जे पुरुष पोता
नि इच्छि या प्रमाणे करवुं इच्छे सो होय ते पुरुष ते रो सुं करवा जोग्य छे। ए प्रश्न छे॥ १३० उत्तर पुर्वे कह्या ए
वा जे सत देव सत का ज सत क्रिया सत से मरा आदिक जे सार अर्थ वांनो ते मनो जोग रा खवो ए

कर वा जोग्य छे॥ ५६॥ श्लोक॥ को धर्म मार्गः शम सत्य शौच क्षमा तपो दान दया दमादिः॥ कः अधर्म मार्गो
अनृत कोप हिंसा पमा दिमता निर्दि थनिग्रहादिः॥ ५७॥ अर्थ॥ हे गुरो धर्म नो मार्ग ते किंयो जांणवो। ए
प्रश्न छे॥ १३१ उत्तर॥ शम तथा सत्य तथा शौच तथा क्षमा तथा तप तथा दान तथा दया तथा दम ए आ
दिक सर्व धर्म नो मार्ग जांणवो॥ हे गुरो अ धर्म नो मार्ग ते कियो जांणवो। ए प्रश्न छे॥ १३२ उत्तर॥ अनृत जे
खोटुं बोलवुं तथा कोप जे क्रोध तथा जीव हिंसा तथा मलिनपणुं तथा इंद्रियुं नो निग्रह न करवो
ए आदिक सर्व अ धर्म नो मार्ग जांणवो॥ ५७॥ श्लोक॥ शमो हि को या हरि निष्ठ बुद्धिर्दमश्च कः स्वेंद्रिय
संयमो हि तपस्य ति को विजयो धृतिः का का स्मा निति क्षा किल दुःख मर्षः॥ ५८॥ अर्थ॥ हे गुरो श
म ते केने कहियें। ए प्रश्न छे॥ १३३॥ उत्तर॥ भगवान ना स्वरूप ने विषे स्थिरता येक रिने जोडा णि जे बु
द्धि ते ने शम कहियें॥ हे गुरो दम ते केने कहियें। ए प्रश्न छे॥ १३४ उत्तर पोताना जे इंद्रियुं ते मन ने विषय
थकि पाछां वालि ने सर्व प्रकारे नियम मा राखवां ते ने दम कहियें॥ हे गुरो धृति जे धीरज पणुं ते किं
ण जांणवुं। ए प्रश्न छे॥ १३५॥ उत्तर॥ शिश्न इंद्रिय ने जिह्वा इंद्रिय ए बेय ने विशेष पणे करिने जे जितवुं

प्र०टी
॥२६॥

तेनेधिरजपराणुंजांणावुं॥ हेगुरोतितिक्षातेकेइजांणावितप्रश्नछे॥१६६॥ उतर देहनेविषेदुःखश्राव
विपडेतेनुसहनकरवुंतेनेतितिक्षाजांणावी॥५८॥ श्लोक कर्मस्वसंगोहिकिमस्तिशौचमसंचकिं
प्रुतहितार्थवाक्यं॥ सागोहिकामस्त्यतपःस्मृतेकिंदानंपरंकिंहाभयप्रदानम्॥५८॥ अर्थः
हेगुरोशौचतेकेनेकहियेएप्रश्नछे॥१६७ उतर॥ कर्मनेविषेअसंगपणुंलोकरिनेजेवर्तवुंतेने
शौचकहियें॥ हेगुरोसत्यतेकेनेकहियेएप्रश्नछे॥१६८॥ उतर॥ जीवोनुंरुडुंथायएवुंजेवचनबो
लवुंतेनेसत्यकहियें॥ हेगुरोतपतेकेनेकहियेएप्रश्नछे॥१६९॥ उतर कामनोजेत्यागकरवोतेने
तेतपकहियें॥ हेगुरोश्रेष्टदानतेकेनेकहियेएप्रश्नछे॥१७०॥ उतर॥ मायानानेकालनाभयथी
छुटाणवुंजेमोक्षरूपदानतेजेतेश्रेष्टदानजांणावुं॥५९॥ श्लोक॥ शौर्यकिमस्तिप्रकृतेर्जयोहिज
गज्जयःकोहिमनोजयोयः स्वर्गश्चकःसत्वगुणोदयोवैकुत्तंचकिंवासुनृतंत्ववाणी॥६०॥ अर्थ॥
हेगुरोशौर्यतेकेनेकहियेएप्रश्नछे॥१७१॥ उतर कोईकजीमनोभुंडोस्वभावपडयोहोयतेने
जितवोतेनेशौर्यकहियें॥ हेगुरोजगनोजितनारीकियोजांणावोएप्रश्नछे॥१७२॥ उतर॥ जेपोमन

नेजितवुंतेनेजगतनोजितनारोजांणावो॥ हेगुरोस्वर्गतेकेनेकहियेएप्रश्नछे॥१७३॥ उतर॥ सत्व
गुणनोजेउदयतेनेस्वर्गकहियें॥ हेगुरोकुततेकेनेकहियेएप्रश्नछे॥१७४॥ उतर॥ सर्वमनुष्य
नेप्रियलागेएविजेवांणीबोलवितेवांणीतेनेरुतकहियें॥ ६१॥ श्लोक॥ धर्मश्चकोवाचरितो
हिसद्भिःश्रुतिस्मृतिभ्यांप्रतिपादितोयःकोवैविरागश्चहरित्तरेषुवस्तुष्टभावोनिखिलेषुसम्यक्
६१॥ अर्थ॥ हेगुरोधर्मतेकेनेकहियेएप्रश्नछे॥ १७५॥ उतर॥ सत्पुरुषतेमणेश्राचरणनेकस्यो
एवोनेवेदनेस्मृतियुतेमणेप्रतिपादनकस्योएवोजेसदाचारतेजतेनेधर्मकहियें॥ हेगुरोवैराग
तेकेनेकहियेएप्रश्नछे॥ १७६॥ उतर॥ एकभगवानविनाबिजांजेकोईप्रकृतिपुरुषथकिपेदा
थयांसर्वकिंचितवस्तुतेमसमस्तवस्तुंनेविषेजेश्रतिशेअभावतेनेवैरागकहियें॥ ६२॥ श्लोक॥
ज्ञानंचजीवेश्वरयोकिमस्तिमूलप्रकृत्साश्चतथाचपुंसःपृथकस्वरूपकाक्षरधामकस्यबो
धोयथार्थपरमात्मनश्च॥ ६२॥ अर्थ॥ हेगुरोज्ञानतेकेनेकहियेएप्रश्नछे॥ १७७॥ उतर॥ जीवतथाई
श्वरतथामूलप्रकृतितथामूलप्रकृतिनोप्रेरकपुरुषतथाअक्षरधामतथाअक्षरधामना

प्र॰टी
१५

वर्त्तिणवो जे आहंस्फिकप्रमाण सर्वनास्वरूपनेजुइजुइ जथारथपणे करिने जे जांणवुं ते नेज्ञानकह्यिये
६२ श्लोक जीवोऽत्मिकः क्षेत्रविदः स्वतेजः स्थूलादिदेहत्रयमंनिवद्धः हृदि स्थितो व्याप्ततनुस्सम
स्तं स्वभावाऽणुर्वचिन्मयस्ववाव ॥ ६२ अर्थ ॥ हे गुरो जीव ते केने कहियेए प्रश्न छे ॥ १४८ उत्तर ।
क्षेत्र जे देह तेने जांणनारो नेपरवस्यूने स्थूलादिक जेत्रणदेह तेने विषे बंधाइने रह्यो ने अणुं जे वो
कितांणे चैतन्यमयएवो ने नस्वशिखापर्यंत अंगप्रसेध्याधिने हृदयने विषे विषेशपणे रह्यो ए
वो जे आत्मा तेने जीव कहिये ॥ ६३ श्लोक । कोस्तिश्वरो यो भुवनत्रयीशो माया विराडादिवपुस्स्व
यंच ॥ करोस्त्यियोसौ जगतां च जन्मस्थेमक्षयान्स्वैवी दिशितां च ॥ ६७ अर्थ । हे गुरो ईश्वर ते केने क
हियेए प्रश्न छे ॥ १४९ उत्तर । पाताललोक मर्त्यलोक ने स्वर्गलोक एत्रणयलोकनापतिएवाने वि
राटस्वत्रात्मा ने अव्याकृत एत्रणयदेहप्रसेध्याधिने रह्याएवाने जगतनि उत्पत्ति स्थिति ने प्रलय
तेनाकरनाराएवाने समर्थ ने सर्वनाजांणनाराएवा जे विराटपुरुष ते मने ईश्वरकहिये ॥ ६८ श्लो
क माया च कार्या त्रिगुणात्मिका सानमो मयीदेहत दियकेषु ॥ अहंममत्वस्य विधान हेतुर्जी

मा

वस्मसर्वेसचरुःस्वरूपा ॥ ६५ अर्थ ॥ हे गुरो माया ते कुंने जांणवि ए प्रश्न छे ॥ १५० उत्तर रज सत्वने त
मएत्रणयगुणात्म्छे स्वरूप जेनुं एविने अज्ञानरूप एविने देहने विषे अहंता बुद्धि ने देहनासंबंधी
ने विषे ममताबुद्धि तेने करावनारि एविने सर्वजीवने दुःखनि देनारि एवि ने परमेश्वरनि कोइक
शक्ति एवि ते ने माया जांणवी ॥ ६५ श्लोक कः पुरुषो वा कथितो महद्भिर्विश्वं च येनैव समस्त्वि ते
मः अनादिरात्मा परमः पुराणः परः प्रकृत्याः प्रकृते नियंता ॥ ६६ अर्थ ॥ हे गुरो पुरुष ते केने क
हियए प्रश्न छे ॥ १५१ उत्तर जगत प्रसे अन्वयपणे करिने रह्याएवाने अनादि एवाने आत्मा ए
वाने पुराण एवाने प्रकृतिथ्यकिपर एवाने प्रकृतिना नियंता एवाने जगत नि सृष्टि करवाने अ
र्थे वासुदेव भगवानने मरोपेरवा जोग्य एवा ते जे ते मोटा पुरुष ते मणे पुरुष एप्रकारे कह्या
छे ॥ ६६ श्लोक किं चाक्षरं धाम हरेरनंतं सुर्योनतद्भासयते कुं राजोतो न चंद्रः पश्चादिमाऽप्रा
काशकं सरं च तेजोमयं ब्रह्म सनातनं च ६७ अर्थ । हे गुरो अक्षरधाम ते कुं जांणवुं ए प्रश्न
छे ॥ १५२ उत्तर । अविनाशि एवुं ने सुर्य तथा चंद्र तथा अग्नि एत्रणये जेने प्रकाशकरि सके

प्र०६१
॥१९॥

ताना थिए वुं ने पृथ्वि [illegible]दिक ते अष्टावर्ण ते थकि पर छे ने असंख्य कोटि कसा मता उदय थया ए
वा जे सुर्य ते मनी जे प्रकाश ते जे धाम ना प्रकाश आगल्य ते जे म सुर्य ना प्रकाश आगल्य पतंगिया नो प्र
काश जणाय ते वो जणाय छे एवुं ते जो मय ने सनातन एवुं जे वासुदेव भगवान नुं ब्रह्मपुर नामे स्था
न कहते ने अक्षर धाम जांणवुं ॥६४॥ श्लोक ॥ को वा परब्रह्म समस्त कार्यः सर्वेश्वरः स्वाक्षर धामव
सि ॥ धर्मात्मजो दिव्य तनुर्नृसिंहः निःशेष नारायण निरंजनी लमूर्त्तिः ॥६५॥ अर्थ ॥ हे गुरो परब्रह्म ते केने
कहिये ए प्रश्न छे ॥१५३॥ उतर ॥ अक्षर धाम ने विषे सदा विराजमान एवा जे ने दिव्य छे मूर्त्ति ते जे
मनि एवा ने जीव तथा ईश्वर तथा पुरुष तथा अक्षर धाम ने विषे रह्या एवा जे असंख्य कोटि अक्ष
र पुरुष एम सर्वे ना स्वामि एवा ने मेघ सरखी श्याम छे मूर्त्ति ते जे मनि एवा ने अपरिमित एवा नर जे
अक्षर पुरुष ते मना जे समूह ते ना मध्य ने विषे छे अयन के ता म ति मध्य सिंहासन ते जे ने तुं एवा ने ध
र्म देव थकि छे जन्म जे मनो एवा वासुदेव ते मने परब्रह्म कहिये ॥६६॥ श्लोक ॥ को वा हथाज्ञानिनई
रिताये सर्वे पि जीवा अचराश्चराश्च ॥ रूपाणि विष्णोर्विलसंति हि ह्युवंदेति ज्ञानेतिजा नास्त ते॰

त्र ॥६७॥ अर्थ ॥ हे गुरो मिथ्या ज्ञान वाला पुरुष ते केवा होय ते मने कह्या छे ए प्रश्न छे ॥१५४॥ उतर ॥
वृक्ष आदिक जे अचर के ता न चाले एवा ने कीट आदिक जे चर के ता चाले एवा जे सर्वे जीव मा
त्र ते सर्वे विष्णुनां रूप विलास करि रह्या छे ए प्रकारे केनारा ने जाणनारा एवा जे पुरुष ते मने मिथ्या
ज्ञानि कह्या छे ॥६८॥ श्लोक ॥ को धर्म ऐकांतिक ईश्वरे या भक्तिः स्वधर्मादि युता ह्यऽनमा ॥ भ
क्ति श्चका प्रेमयुताऽनुवृत्ती से वा हरेर्या नवधा प्रसिद्धा ॥६९॥ अर्थ ॥ हे गुरो एकांतिक धर्म ते कि
यो जांणवो ए प्रश्न छे ॥१५५॥ उतर ॥ सर्व ना नियंता एवा जे वासुदेव भगवान ते मने विषे स्वधर्म ज्ञान
ने वैराग ते मणे जुक्त जे अचल भक्ति ते जे ते एकांतिक धर्म जांणवो ॥ हे गुरो भक्ति ते केने कहिये
ए प्रश्न छे ॥१५६॥ उतर ॥ भगवान नि मरजि प्रमाणे प्रेमे सहित एवि जे भगवान नि नव प्रकारे सेवा
ते ने भक्ति कहिये ॥७०॥ श्लोक ॥ का मुक्तिरुक्ता त्रिगुणो विहीनं संप्राप्यऽस्वरूपं परमात्म भक्तिः
को वा लविज्ञो ॥ वगता मरादि नगुणान्विबुधाश्चि मुरवेषु धिरः ॥७१॥ अर्थ ॥ हे गुरो मुक्ति ते केने॰
जांणवि ए प्रश्न छे ॥१५७॥ उतर ॥ रज सत्व ने तम रा जे त्रण गुण ते मणे रहित एवुं जे पोता नुं स्वरूप

प्र०टी
॥१९॥ तेनेपांमिनेकेतांश्रुरुसत्तारूपछेनेपरमात्मानीजेभक्तिकरवितेनेमुक्तिकहियें॥हेगुरोआ
त्मवेत्तापुरुषतेकेनेजांणवोएप्रश्नछे॥१५८॥उत्तर॥जीवनेविषेरह्याएवाजेअज्ञछेइप्रभेदअज्ञ
कृइयअद्राह्यअमरत्वअ्मेआदिकजेगुणतेमनेजांणिनेसुखदुःखनेविषेवर्त्तानछेआयतेने
आत्मवेत्तापुरुषकहियें॥७१॥श्लोक॥कश्चात्मभावाअजरामराजसत्तामयाज्ञानघनादयोये
केदेहभावाःकृशपीनताशिवाअस्वतारूप्यकष्टहताह्याः॥७२॥अर्थ॥हेगुरोआत्माना
स्वभावतेकियाजांणवाएप्रश्नछे॥१५९॥उत्तर॥अजरपणुंनेअमरपणुंनेअजपणुंसत्ता
रूपपणुंनेज्ञानघनपणुंएआदिकजेगुणतेजेतेआत्मानास्वभावजांणवा॥हेगुरोदेहनास्व
भावतेकियाजांणवाएप्रश्नछे॥१६०॥उत्तर॥दुबलुंथावुंनेजाडुंथावुंनेनाशथावुंनेआजपणुंथावुं वुं
जीवनपणुंथावुंनेदुःखपणुंएआदिकजेविकाररूपभावतेनेदेहनास्वभावजांणवा॥७२॥श्लो
क॥एमेंस्वेकांगत्वंलोसाधकंसांख्यंकिमात्मप्रतिपादकंयद्दृष्ट्वाकृतुविंशतिकाज्ञात्वायो
गश्चकोध्यानपरस्यकृष्णेमेस्वेकाग्रतासाधकआत्मह ने॥७३॥अर्थ॥हेगुरोसांख्यशास्त्रतेके

नेकहियेंएप्रश्नछे॥१६१॥उत्तर॥चोविसतत्वथकिपृथकपणेजीवात्मानुंप्रतिपादनकरना
रुंएवुंजेशास्त्रहोयतेनेसांख्यशास्त्रजांणवुं॥हेगुरोयोगशास्त्रतेकेनेकहियेंएप्रश्नछे॥१६२
उत्तर॥ध्यांननोकरनारोएवोजेपुरुषतेनामनन्निरोधवृत्तितेनुंश्रीकृष्णभगवाननेविषेरुडेप्र
कारेएकाग्रपणोतानोकरावनारोएवोजेग्रंथतेनेयोगशास्त्रकहियें॥७३॥श्लोक॥वेदेषुकिंवा
धिनाप्राप्तंवर्णाश्रमस्थाःस्वकिलमानवाणाम्॥यथाधिकारंकथितास्वधर्माधर्मार्थ
कामादिकसिद्धिरूपाः॥७४॥अर्थ॥हेगुरोच्यारवेदनेविषेलख्यातेमाणसोनेकतव्यछेएप्रश्नछे
१६३उत्तर॥च्यारवर्णनेविषेनेच्यारआश्रमनेविषेरह्याएवाजेमनुष्यतेसर्वनाजेवोजेनेअधि
कारतेप्रमाणेधर्मजेनेकह्याछेअनेधर्मअर्थकामनेमोक्षनेमनिसिद्धिजेतेकहिछे॥७४॥
श्लोक॥व्यासेनकिंभागवतेपुराणेतंसर्गादिपूर्वंदशलक्षणानि॥किंतत्रवेद्यंछेभगवांस्वरूपंमा
हात्म्यपूर्वंचमध्यमेभक्तिः॥७५॥अर्थ॥हेगुरोभागवतनेविषेव्यासजियेशुंकह्युंछेएप्रश्नछे॥१६४
उत्तर॥सर्गतथाविसर्गतथास्थानतथापोषणतथाऊतितथामन्वंतरकथाईशानुकथा

प्र०टी। २०

तथा निरोधस्तथा मुक्ति तथाऽऽश्रयास्तथा लक्षणा जे ते विस्तारे करिने कह्यां छे ॥ हे गुरो ते भागवत
ने विषे जाणवो जोग्य ते शुं छे ए प्रश्न छे ॥ ६५ उत्तर ॥ माहात्म्ये सहित एवुं जे भगवाननुं स्वरूप तथा ते
स्वरूपने विषे धर्मादिक गुणो जुक्त एवी भक्ति एवा ने जाणवा जोग्य कह्या छे ॥ ७५ श्लोक वेदादिस
च्छास्त्रफलं किमस्ति श्रीशो महत्त्वादिसधर्मभक्तिः केन त्वविघ्ना हि हरिं त्वमूर्जिं वदंति येनास्ति
क कुंड कौलाः ॥ ७६ अर्थ हे गुरो वेदादिक सत्शास्त्रनुं फल शुं छे ए प्रश्न छे ॥ ६६ उत्तर लक्ष्मीजी
ना पति एवा जे नारायण ते मने विषे माहात्म्यज्ञान छे मुख्य ते जेने विषे एवी जे धर्मसहित भक्ति ते ते ते म
नुष्य ते मणी कल्याणने अर्थे करवी ते ज सर्व शास्त्रनुं फल छे ॥ हे गुरो भक्तिने विषे विघ्नना करनारा
ते कीया छे ए प्रश्न छे ॥ ६७ ॥ उत्तर ॥ ए कर्ता भगवानने निराकार कहेनारा बीजा नास्तिक त्रीजा कुंड
मार्गवाला चोथा कौल मार्गवाला ए च्यार प्रकारना जे पुरुष ते जे ते भगवाननि भक्तिने विषे विघ्न क
रनारा छे ॥ ७६ श्लोक न क्रोधि हेयः पुरुषो हि को वा सत्कर्मनिष्ठः प्रियसत्यवादि । दुःखे विपत्यौ मुहुर
तिनो कदापि विबोधे प दुःखे स्थिरधीश्च धीरः ॥ ७७ अर्थ हे गुरो क्यारे पण त्याग करवा जोग्य नहि

एवो ते कियो पुरुष जाणवो ए प्रश्न छे ॥ ६८ उत्तर ॥ सत धर्मने विषे दृढ पणे वर्त्ततो होयने कोई
दुःख न थाय एवुं ने ज्युथार्थ हित ने करे एवुं जे वचन ते नो केनारो ने दुखने विषे पण मुंझाय नहि ने वि
ते ज्ञाने जे समजावव ने विषे अतिशे डाह्यो होयने सर्व प्रकारे स्थिरबुद्धिवालो केतां कोई ज्ञान सने तो भक
रिने के जां चे करिने जेनी बुद्धि कदापि फरी जाति नहोयने अतिक्रोधि रहवा ना जे एवो जे पुरुष होय ते
क्यारे त्याग करवा जोग्य नथि ॥ ७७ श्लोकः मा को जनः को प्रियसत्यवाणि राऽन्यावि रोधी जन वैर
कारिक्रोधि विधायार भते च कर्मस्वमाविहिनः स्वगुण प्रसंसी ॥ ७९ अर्थः हे गुरो त्याग करवा जोग्य
एवो ते कियो छे ए प्रश्न छे ॥ ६९ ॥ उत्तर जेनो वचन पथ्य ग निपे ठेप इतां होयने खोटां बोलो होयने अ
ज्ञानो विरोध करनारो केतां अज्ञानी कि अवलो चालनारो ने इर्षा सां मनुष्य सं घाथे वैर नो करनारो
ने क्रोध करीने पछे काम काज करवानो आरंभ ना दरे करीने करतो होयने स्वमाथेर हित ने पोता
ना गुणानां वखाणा पण पोते करतो होय एवो जे पुरुष ते जे ते त्याग करवा जोग्य छे ॥ ७९ श्लोक ॥
को वो त्तमः पुरुष एवलो के सर्वस्वभावे कुरुते मनो यः ने छ स भावं च कदापि कस्सस्य वा

प्रश्नो॥
२१

दिहिमृदुस्वभावः॥ ७९॥ अर्थः हेगुरोउत्तमपुरुषतेकेनेजांणवोएप्रश्नछे॥ १७०॥ उतर॥ सर्वेनुरू
डुथायएवुंइछतोहोयनेकोइनुंरुडुंथायएवुंकह्यारेयनइछतोहोयनेसाचाबोलोहोयनेकोमलस्व
भावबालोहोयएवोजेपुरुषतेजेतेउत्तमजांणवो॥ ७९॥ स्लोक॥ कोमध्यमोयोमनसाचवाचा
कायेनेयस्मिन्ननुबस्नतेच॥ नंधीवतस्मिन्नपिवर्त्ततेयोगुनाहिचयोसोगुणादोषयोस्तु॥ ८०॥
अर्थ॥ हेगुरोमध्यमपुरुषतेकेनेजांणवोएप्रश्नछे॥ १७१॥ उतर॥ मनेकरिनेलथावांणियेकरि
नेतथादेहकरिनेजेनेविषेजेप्रकारेवर्त्ततोहोयतेनेविषेवणतेजप्रकारेजेपुरुषवर्त्ततोहोयने
गुणनेदोषएबेयनोग्रहणकरनारोएवोजेपुरुषहोयतेमध्यमजांणवो॥ ८०॥ स्लोक॥ कोवाक
निष्टःपुरुषोऽकृतज्ञोमित्रंनकस्यापियरात्मशंकी॥ स्त्राहुविहिनोहितवाचीकार्याऽकार्ये
नज्ञानातिसदोषेद्रष्टिः॥ ८१॥ अर्थ॥ हेगुरोकनिष्टपुरुषतेकेनेकहियेएप्रश्नछे॥ १७२॥ उतर॥ क
र्याकृतनेनजांणतोनेकोइकनुंमित्रपणुंपणकोइरारवेनहिनेवरखकिपोतानिशंकानोकर
नारोनेपोतानाहितनिवारणमांपणअस्रुयारहितनेकरवाजोगपनेनकरवाजोगपजेकर्मतेनेजां

णेनहिनेकेवलपरनादोषनेजदेरवतोहोयएवोजेपुरुषतेजेतेकनिष्टजांणवो॥ ८१॥ स्लोक॥
कोवासकामोहरिमंतराय स्त्विकछे चतुर्वर्गमसौसकामः॥ कोवाऽस्सऽकामस्तुहरिंविनायो
छेच्छतुर्वेममसौकदापि॥ ८२॥ अर्थ॥ हेगुरोसकामपुरुषतेकेनेजांणवोएप्रश्नछे॥ १७३॥ उतर॥
भगवानविनाधर्मअर्थकामनमोक्षएच्यारपदार्थनेजेइछेछेतेसकामजांणवो॥ हेगुरोनि
ष्कामपुरुषतेकेनेजांणवोएप्रश्नछे॥ १७४॥ उतर॥ एकभगवानविनाधर्मादिकच्यारपदार्थे
नेकह्यारेयनइछेतेनिष्कामजांणवो॥ ८२॥ स्लोक॥ नैसैजयःकस्तरुणएछ्युवाधिवात्मादिनानुरो
यमहर्निशंचअहन्नयरुपाफलंपुरुषमवृहिःपूर्वस्थितेस्त्रावियथालयःस्यात॥ ८३॥ अ
र्थ॥ हेगुरोनिसप्रलयतेकेनेजांणवोएप्रश्नछे॥ १७५॥ उतर॥ जेमरात्रिनेनेविषेतथादिवसनेवि
षेनिरंतरनदरमांस्नावनिएविफलपुष्पनिहतितेथातिजायछेनेतेनिपूर्वअवस्थानो
नाशथातोजायछेतेमजोवनअवादिकजेअवस्थातेअावतिजायछेनेबालपणादिकजेअ
वस्थातेनोनिरंतरनाशथातोजायछेतेनेनिसप्रलयोहिंयेत्रकार्येप्रकसानिजांणवो॥ ८३

प्र० टी
२२

८३ श्लोक नैमित्तिकः कोदृशो लोकनाशः कृत्वा निमित्तं स्तनी विधेयः कः मास्कृतो वा प्रलयो
हि यत्र कार्यं प्रकृता निधने प्रयोति ॥ ८७ अर्थ हे गुरो नैमित्तिक प्रलय ते कियो जाणवो ए प्र
श्न छे ॥ १७६ उत्तर ब्रह्मा नि रात्रि ने निमित्त करि ने पाताल थि लेन स्वर्ग पर्यंत चउद लोक नो जे ना
श ते ने नैमित्तिक प्रलय जाणवो ॥ अर्थः हे गुरो प्राकृत प्रलय वळी ते कियो जाणवो ए प्रश्न छे ॥ १७७
उत्तर ॥ प्रकृति नुं कार्य सर्वे प्रकृति ने विषे लीन थइ जाय ते ने प्राकृत प्रलय जाणवो ॥ ८७ श्लो
कः आत्यंतिकः कः प्रलयोस्ति सम्यक लीने प्रयातः पुरुषस्य माया ॥ ततो यदा स्त्री पुरुषो
मसत्ते जग्ध्ये तत्र तदा सराव ॥ ८५ ॥ अर्थ हे गुरो आत्यंतिक प्रलय ते केने कहिये ए प्रश्न छे
१७८ ॥ उत्तर श्री पुरुषोत्तम ना धाम रूप जे अक्षर ब्रह्म नुं ते ने विषे ज्यारे प्रकृति पुरुष लीन नेत
थइ जाय त्यारे ते ने आत्यंतिक प्रलय जाणवो ॥ ८५ ॥ श्लोकः किं वा तमो ज्ञानमयं विमूढं दुःख
प्रदं विस्मृति कारकं च ॥ चिरुद्ध कर्मा ऽऽश्रयतां मति घ्नं मोह प्रदं ह स्मृतां हि निसम ॥ ८६ दे
अर्थ हे गुरो तमोगुण ते केने कहिये ए प्रश्न छे ॥ १७९ उत्तर अज्ञान छे स्वरूप जेनुं ने जे ने विषे

मूढ पणुं रह्युं छे ने दुःख ने देनारो ने स्मृति ने भुलावि देनारो ने अवळा कर्म नो करावनारो ने मति नो ना
श नो करनारो ने जे जीवुं ने मुकावनारो एवो जे गुण ते ने तमोगुण जाणवो ॥ ८६ ॥ श्लोकः रजश्च किं रागम
यं चलं च घशांतम् नाना क्रिया कृ द्विषय प्रसक्तम ॥ सत्त्वं च किं ज्ञानमयं प्रकाशमानंददं यहि मदं
प्रशांतम ॥ ८७ ॥ अर्थ हे गुरो रजोगुण ते केने कहिये ए प्रश्न छे ॥ १८० ॥ उत्तर राग छे स्वरूप जेनुं ए
वो ने चंचळ एवो ने नाना प्रकार नि क्रिया ने विषे आसक्ति नो करावनारो ने विषय ने विषे जीव नि वृत्ति
युं ने चोटा वि देनारो एवो जे गुण ते ने रजोगुण कहिये ॥ हे गुरो सत्त्वगुण ते केने कहिये ए प्रश्न छे ॥ १८१
रूडुं छे ज्ञान ते जे ने विषे एवो ने प्रकाश नो करनारो ने आनंद नो करनारो ने निर्मळ ने प्रशांत रूप एवो
जे गुण ते ने सत्त्वगुण कहिये ॥ ८४ ॥ श्लोकः तपश्च किं सात्त्विक मिश्च राघं श्रद्धा ऽन्वितं साधु फलान
पेक्षम् ॥ किं राजसं तत्त्वि ज किन्ति कामं लोकेषु पूज्य फलैकतानम् ॥ ८८ उत्तर हे गुरो सात्त्विक
तप ते कुण जाणवुं ए प्रश्न छे ॥ १८२ ॥ उत्तर भगवान ने पांमवा ने अर्थे कर्युं होय ने श्रद्धाये जुक्त होय
ने श्री हरि रूप महाराज नि मूर्त्ति विना बिजा फळ नि इच्छा थी रहित एवुं जे तप ते ने सात्त्विक तप कहि

ये ॥ हे गुरो रजोगुणि तप ते केने कहियें ए प्रश्न छे ॥ १८३ ॥ उत्तर ॥ पोतानि किर्त्तिं वधारवाने अर्थें क
रयुं होय ने लोकने विषे पूजावुं राज छे ते कफल ते जेनुं एवुं जे तप तेने रजोगुणी तप जाणवुं ॥ ८८ ॥ श्लोक
किं तामसं मे कथितं तपो ऽन्य परस्य हिंसा फलमात्म मूकामकं मे परं मुढधिया प्रणीतं तं निर्णीतं दुः
खैक फलं नितांतम् ॥ ८९ ॥ अर्थ हे गुरो तमोगुणी तप ते केने कहियें ए प्रश्न छे ॥ १८४ ॥ उत्तर ॥ शत्रु
आदिकनो इंकजीवना नाशना अर्थें करयुं होने केवल मुढ बुद्धियें करिने करयुं होय ने पोताने दुः
खरूप फलनुं देनारु एवुं जे तप तेने तमोगुणी तप कहियें ॥ ८९ ॥ श्लोकः ॥ किं सात्विक कर्म तदेव
रागद्वेषादि हिनेच सद्धीप्रणीतं ॥ स्वं क्रियवर्णाश्रमयोग्यमेव फलानुसंधानतया विहितं ॥ ९०
॥ अर्थ हे गुरो सत्वगुणि कर्म ते केने कहियें ए प्रश्न छे ॥ १८५ ॥ उत्तर रागद्वेषादिकें रहित एवुं ने रूडि
बुद्धियें करिने करयुं एवुं ने पोताना वर्णाश्रमने जोग्य एवुं करयुं होय ने भगवान विना बिजा फ
लना अनुसंधाने रहित एवुं जे कर्म तेने सत्वगुणि कर्म कहियें ॥ ९० ॥ श्लोक किं राजसं वा कथितं च
कर्म फलाभिलाषोचितयोगयुक्तम ॥ अहंक्रियावत्त्निकृतं प्रकामप्रयासयुग्राजसं यदस्ति ।

९१ ॥ अर्थ हे गुरो रजोगुणि कर्म ते कुं ता कहुं छे ए प्रश्न छे ॥ १८६ ॥ उत्तर ॥ फलनि अभिलाषाने वि
षे जोग्य एवो जे उपाय तेणे युक्त ने अहंक्रियावृत्तियें करिने करयुं ने काया दारवडायें करिने
युक्त ने प्रितियें सहित एवुं जे कर्म तेने रजोगुणि कर्म कहियें ॥ ९१ ॥ श्लोक समिरितं तामसकर्म किं
यत्तस्व क्रियदुःखक्षयशक्त्ययोगाः तोनो समिहितेव विधिपत्ते चाहिंसामयमोहवज्ञाज्ञजनैस्त
त ॥ ९२ ॥ अर्थ हे गुरो तमोगुणि कर्म ते कुं जाणवुं ॥ १८७ ॥ उत्तर ॥ हिंसामय एवुं ने पोताने दुःख थाय
एवुं होय तेने न जुवे तथा पोताना नाश थाय एवुं होय तेने न जुवे पोतानुं जे बल तेने न जुवे ए प्रका
रे जोया विनाने तपास करया विना पुरुष ते मणे जे कर्म करि ते ने तमोगुणि कर्म कहियें ॥ ९२ ये
श्लोक कः सात्विको वा विहितो हि कर्त्ता [illegible] सुखाहद्धैर्यो ऽनितताप वेदुःखवत्तिश्व
सिद्धौ रति निर्विकारो ऽहंवादहिनोऽपि फलानपेक्षः ॥ ९३ ॥ अर्थ हे गुरु सत्वगुणि कर्त्ता ते कियो
जाणवो ए प्रश्न छे ॥ १८८ ॥ उत्तर न सुखे हे युक्त ने धिरजताये युक्त ने पोतानुं आरयुं थाय तथा न
थाय तोय मनमां ते बेय विषे हरख शोक न पामे ते वो ने अहंकारें रहित एवो ने फलनि इच्छा

प्र०टी
२७

धैरहितताथोजेकर्त्तातेजेतेसात्विककर्त्ताजांणवो॥ २६ श्लोक कर्त्ताथकोराजसिकोत्ति
थोसौ पचस्वजनस्त्रविषयेषुसक्तः॥ क्रियाफलेच्छुः परपिडकोपि लब्धुद्कर्मोपिलहर्ष
शोकः॥ २७ अर्थः हेगुरो राजसिक कर्मनो करनारो ते केवो जांणवो ते प्रश्न छे॥ १६५ उत्तर॥ नि
रंतर पंच विषयने विषे आसक्त तावो ने क्रियाफलनी इछा वालो ने पोताना स्वार्थ ने अर्थ बी
जाने पीडानो करनारो तावो ने अशुद्ध तावो जे कर्म तेनो करनारो तावो ने हरख शोकना पोमना
रो तावो जे कर्त्ता होय तेने रजोगुणी कर्त्ता जांणवो॥ २८ श्लोक कर्त्ता मत्तो ऽनार्तरोषरवेदी
यथार्थकर्मा ऽऽ चरणत्वसूत्मः॥ शास्त्रीयकर्म प्रति कूलकर्मा जो कप्रतारोभ्यमिचारका
रि [?] अर्थ हेगुरो तमोगुणी कर्त्ता ते कि वो जांणवो ते प्रश्न छे॥ १६६ उत्तर॥ बकुक्रोधवालो
ने बकुरवेदना खनारो तावो ने जथार्थ कर्मना आचरणे रहित तावो ने सत शास्त्र मांकरवा
जोग्य कर्त्ता तावो जे कर्म ते थकि अवलो छे कर्म जे तेनो तावो ने लोकनो ठगनारो ने मंत्र तंत्र
मुठ चोटटा आदिके करिने लोकुं ने मारनारो तावो जे कर्त्ता ते जे ते तमोगुणी कर्त्ता जांणावो

[?] श्लोक कासात्विकि बुद्धिरपि प्रवृत्ति निवृत्ति रूपे स्थिरकार्यकार्यौ॥ भया ऽभये वंधनमो
क्षौ च न यानयो वुध्यति यथार्थं॥ २८॥ अर्थः हेगुरो सत्वगुणी बुद्धि ते केई जांणवि ते प्रश्न छे॥ १६७
उत्तर॥ प्रवृत्ति कर्म ने निवृत्तिक कर्म ते ना स्वरूप ने तथार्थपणे करिने जे बुद्धि जांणवि होय तथा
करवा जोग्य ने नकरवा जोग्य तथा भय ने अभय तथा बंधन ने मोक्ष तथा माया ने अमाया ए सर्व
ना स्वरूप ने जथार्थपणे करिने जे बुद्धि जांणति होय ते बुद्धि जे ते सत्वगुणी जांणवि॥ ३० श्लोक
काराजसि बुद्धिरकार्यकार्ये धर्मेतरौ वेत्ति नयायथार्थम कातामसि धर्ममनुतेह्य ऽधर्मं धर्मं
च पाप थ मनयेयंती॥ ३१॥ अर्थः हेगुरो रजोगुणी बुद्धि ते केई जांणवि ते प्रश्न छे॥ १६८ उत्तर
न करवा जोग्य ने करवा जोग्य एवुं जे कर्म तथा धर्म ने अधर्म ते मने जथार्थपणे करि ने जे बु
द्धि ने जांणवि होय ते रजोगुणी बुद्धि जांणवि॥ हेगुरो तमोगुणी बुद्धि ते केई जांणवि ते प्रश्न छे॥
१६९ अर्थ जे बुद्धि अधर्म ने विषे धर्म ने मानति होय ने अर्थ होय ते ने अने थे करि ने अवलि होय ते
बुद्धि ते तमोगुणी जांणवि॥ [?] श्लोक कातामसि भवति भक्तिरारिह्नयथार्थयत॥ श्रीपतेर्भज

प्र०टी
२५
ते

नमप्यथदंभबुध्या ॥ यद्देवपूजनपरं च विलोकलोकमर्मं समत्सरतया च तनमस्य सेव ॥ ९६
हे गुरो तमोगुणी भक्ति ते केई जांणवी ए प्रश्न छे ॥ ९६ ॥ उत्तर पोताना शत्रुनो नाश करवाने
अर्थे लक्ष्मीपतिनुं भजन करवुं तथा दंभे करीने जे भजन करवुं तथा बीजो कोईक देवपूजन क
रतो होय तेने देखीने तेना उपर मत्सर लावीने जे पूजन करवुं तेने तमोगुणी भक्ति जांणवी ॥ ९६
श्लोक कारागृहेभ्यवतिरोगधनादिलब्ध्यै यः श्रद्धया परमया भजते हरिं यत ॥ सा लोकसुखप
द्मासुमनाश्लोकविरमातकीर्तिमधिगंतुमना भजेद्यः ॥ ९७ ॥ अर्थ हे गुरो रजोगुणी भक्ति ते
केई जांणवी ए प्रश्न छे ॥ ९७ ॥ उत्तर राज्य तथा धन पुत्रादिकनी प्राप्तिने अर्थे जे भगवाननी भ
क्ति करवी तथा लोकसुख सांभलीने साहित्य अपर प्रकारनी मुक्तिनी प्राप्तिने अर्थे जे
भक्ति करवी तथा लोकने विषे पोतानी कीर्ति धारवा सारु जे भक्ति करवी तेने रजोगुणी भ
क्ति जांणवी ॥ ९७ ॥ श्लोक कामान्विकित्स्वकृतपापविनाशहेतो स्तं प्रार्थयन्निरिविज पापवि
नाशहेतुं म ॥ सम्यग्धरे प्रियमिदं स्विति कल्पयन यः श्रद्धया परमया अथ हरिं भजेत सा ॥ ९८ ॥

हे गुरो सत्वगुणी भक्ति ते केई जांणवी ए प्रश्न छे ॥ ९८ ॥ उत्तर पोताना प्राणनो नाश करवा
ने अर्थे पापनां नाश करनारा एवा जे हरि तेमने जे भक्ति करवी तथा आ वली भगवानने वहालुं प्रिय
छे ने आ भगवानने अतिशे गमे छे ए प्रकारे संकल्प करीने अतिशे श्रद्धाए सहित भगवाननी जे भक्ति क
रवी ते जे तेने सत्वगुणी भक्ति जांणवी ॥ ९८ ॥ श्लोक माहात्म्ययुक्तज्ञानमिदं किमुक्तं दिव्ये अक्षरधामनि
सेव्यमानः ॥ यः कृष्ण इस्वेव सर्वेषु के ब्रह्मांडनाथो भुवि विदंनयत ॥ ९९ ॥ अर्थ ॥ हे गुरो महात्म्ये सहि
त ज्ञान ते केने कहुं छे ए प्रश्न छे ॥ ९९ ॥ उत्तर दिव्य एवुं जे अक्षरधाम तेने विषे दिव्य पार्षदे तेमणे सेव्य
मान एवा ने अगणित ब्रह्मांडना पति एवा ने एक एक ब्रह्मांडने विषे कोटांनकोटि सूर्यना तेजने तां
खुं करनार एवुं छे तेज ते जे मने एवा ने सर्व कारणना कारण एवा जे दिव्यमूर्ति श्री कृष्ण भगवान ते पो
ते जीवुंना कल्याणने अर्थे ने धर्मना स्थापनने अर्थे पोताना दिव्य प्रतापने संताडीने मनुष्य जेवा
जणाय छे पण मनुष्य जेवा नथी तेना तेज आदि दिव्यमूर्ति श्री कृष्ण भगवान विराजमान छे ए प्रकारे जे
जांणवुं तेने माहात्म्ये सहित ज्ञान कहिये ॥ ९९ ॥ श्लोक योगोस्ति कोंतः करणस्य शुद्धेः सतो मनोया

प्र०टी
२६

त्विषयोपभोगान॥ विज्ञायतांस्तान्सुखदुःखरूपान्पूर्वेव भोगोतपरोपभोगः॥१९२॥अर्थ हेगुरो
अंतःकरणनिशुद्धथावानोउपायतेकियोछेएप्रश्न॥१९३॥उत्तर॥सतनेअसतएवाजेविषय
भोगतेमनेजेयथार्थपणेजांणीनेसतशास्त्रतेमणेप्रतिपादनकरूएवाजेसतविषयभोगतेमनेभो
गववानेसतशास्त्रतेमणेप्रतिपादननकरूंएवाजेअसतविषयभोगतेमनोत्यागकरवोएअंतः
करणनिशुद्धिथावानोउपायछे॥अथवाभगवानसंबंधिजेविषयतेभोगववानेभगवाननासं
बंधेरहितएवाजेअसतविषयभोगतेनोत्यागकरवोएअंतःकरणनिशुद्धिथावानोउपायछे॥
१९२॥श्लोक किंब्रह्मचर्यफलमेतदेवचेतःसमृद्धिःमतिबुद्धिदृष्टिःहरिप्रियत्वंबलवीर्यतेज
आयुर्महाकीर्तिसुखस्यलाभः॥१९३॥अर्थ हेगुरोब्रह्मचर्यव्रततेनुफलतेकुंणछेएप्रश्न॥
१९४॥उत्तर सतशास्त्रनेविषेतथासतधर्मनेविषेतथासतपुरुषनेविषेतथाभगवाननेविषेज्ञा
ननिवृद्धिथायनेअंतःकरणशुद्धथायनेभगवानप्रसन्नथायनेजोबलनियोथायनेतेजकि
र्तिआदिकगुणनिवृद्धिथायएब्रह्मचर्यपालवुंतेनुफलछे॥१९३॥श्लोक कोनारकोवैषम

ज्ञातिबुद्धिःसर्वेशभक्तेष्वसमधिर्नरेषु॥अर्चादिकेषुयस्यपरंशिलादिःसत्साधुषुमत्साधुषुतुल्य
बुद्धिः॥१९७॥अर्थ हेगुरोनरकनेविषेपडवावालोएवोतेकियोपुरुषजांणवोएप्रश्नछे॥२००॥उत्तर
धर्मज्ञानआदिकगुणेकरिनेजुक्तएवाजेभगवानना भक्तजनतेमनेविषेजेपुरुषनेज्ञातिपणानि
बुद्धिछेनेसर्वेनास्वामिएवाजेश्रीकृष्णभगवानतेमनेविषेनेबिजाजेमनुष्यतेमनेविषेजेपुरुष
नेसमभावछेअनेभगवाननिप्रतिमानेविषेजेपुरुषनेकेवलपाषाणपणानिबुद्धिछेअनेसतसाधुने
विषेनेअसतसाधुनेविषेजेनेतुल्यपणानिबुद्धिछेएवोजेपुरुषतेजेतेनारकीजांणवो॥२०१॥
श्लोक किंब्रह्मचर्यंगृहिणांमिहोक्तंहित्वैवसम्यग्गुरोगृहस्थनेब्रह्मचर्यतेकुणकह्युंछेए
प्रश्नछे॥२०२॥उत्तर सर्वप्रकारेंपरस्त्रीनोत्यागकरिनेनेसर्वेअमावास्यादिकदिवसमांअनेमितथाजन्म
अष्टमितथाअग्याराआदिकदिवसनेविषेपोतानीपरणेलीजेस्त्रीतेनोपणसंगनकरवोए
गृहस्थनेब्रह्मचर्यकह्युंछे॥२०४॥श्लोकः साधारणःकोमनुजस्यधर्मोऽहिंसाचसत्यंचनचौ
रताच॥त्यागःपरस्त्र्याःपलमद्यकादेर्येहिस्युभक्तिर्विजयःस्मरादेः॥२०६॥अर्थ हेगुरोमनुष्यनोसा
मान्य परदारसंगमत्याग...

प्र०री
२७

धारणा धर्म ते कुंण छे ए प्रश्न छे ॥ २०२ ॥ उत्तर जीवमात्रनि हिंसा न करवि तथा साचुं बोलवुं तथा चो
रिन करवी तथा परस्त्रीनो संग न करवी तथा मांस न खावुं तथा दारु न पिवो तथा ताडि आदिक
आयार प्रकारनुं मद्य तेनुं पान न करवुं तथा काम क्रोध आदिकने जीतवा तथा विष्णुनि भक्ति क
रवि ए मनुष्यनो साधारण धर्म कह्यो छे ॥ १०२ ॥ श्लोक ॥ विप्रस्य धर्मो विहितो ऽत्र को ऽस्ति शमो दमो
ज्ञानतपः शुचित्वम् । श्रद्धा क्षमा ऽऽस्तिकता दयादिरेषः स्वाभाविको यं हरिभक्तिपूर्वः ॥ १०३
अर्थ ॥ हे गुरो ब्राह्मणनो धर्म ते कियो जाणवो ए प्रश्न छे ॥ २०३ ॥ उत्तर शम तथा दम तथा ज्ञान त
था तप तथा शौच तथा श्रद्धा तथा क्षमा तथा आस्तिकपणुं तथा दया तथा विष्णुनि भक्ति
करवि ए आदिक ब्राह्मणनो स्वाभाविक धर्म जांणवो ॥ १०३ ॥ श्लोकः ॥ क्षत्रस्य धर्मः सहजो पि
कोयं शौर्यं च धैर्यं च महाबलादिः । गोविप्रसत्साधुजनस्वरक्षा श्रीकृष्णभक्तिर्नितरां स तपः ॥ १
०४ ॥ अर्थ ॥ हे गुरो क्षत्रीयनो धर्म ते कुंण जांणवो ए प्रश्न छे ॥ २०४ ॥ उत्तर शूरवीरपणुं तथा धी र
रजपणुं तथा मतापिपणुं तथा बलवानपणुं तथा गायुं ब्राह्मण ने साधु ते मनि रक्षा करवी त

था श्रीकृष्ण भगवाननि भक्ति करवि ए जे ने क्षत्रिनो धर्म जांणवो ॥ १०४ ॥ श्लोक ॥ धर्मो विशां कः
कृषिवाणिज्यं गोरक्षा कुसिदादिक एष एव । शुद्रस धर्मः प्रुदितो ऽस्ति को वाय कृड वद्धात्र विप्रा
च सेवा ॥ १०५ ॥ अर्थ ॥ हे गुरो वैश्यनो धर्म ते कुंण जांणवो ए प्रश्न छे ॥ २०५ ॥ उत्तर ॥ खेड करवि तथा
व्यापार करवो तथा गायु रखवियुं तथा व्याज वटाक करवुं ए आदिक धर्म ते जे ते वैश्यनो जांणवो
हे गुरो शुद्रनो धर्म ते कीयो जांणवो ए प्रश्न छे ॥ २०६ ॥ उत्तर ब्राह्मण क्षत्रि ने वैश्य ए त्रण्य वर्णनी
चाकरि करवि ए शुद्रनो धर्म जे ते जांणवो ॥ १०६ ॥ श्लोकः को वर्णिधर्मो भवतिह यो ऽयं सर्गो ऽष्ट
धा सज्जनसेवनं यम । भूषांजनादेः परिवर्जनं च न स्पर्शनं चित्रितयोषितापि ॥ १०७ ॥ अर्थ हे गु
रो ब्रह्मचारिनो धर्म ते कुंण जांणवो ए प्रश्न छे ॥ २०७ ॥ उत्तर अष्ट प्रकारे स्त्रीनो संग न करवो तथा
सत्पुरुषनि सेवा करवि तथा आभूषण न पेरवां तथा नेत्रने विषे आंजण न आंजवुं तथा चित्राम
णनि स्त्रीनो पण स्पर्श न करवो ए आदिक ब्रह्मचारिनो धर्म जे ते जांणवो ॥ १०८ ॥ श्लोक ॥ धर्मो गृ
हस्थ्य परस्त्री कदैरितो ऽस्ति संगः स्वतामेव तु विष्णुभक्तिः न्यायेन वित्तार्जनम्भवा रिवर्जै स्मृतो

प्र॰ ८१। २८

आचरता ऽ तिथिनां म ॥ १११ अर्थ हे गुरो गृहस्थनो धर्म ते कुण कह्यो छे ए प्रश्न छे ॥ २०८ उत्तर सत
पुरुषनो समागम करवो तथा विद्य भगवाननी भक्ति करवी तथा न्याये करिने धन मेळवुं करवुं त
था अन्न जळ वस्त्र आदिक पदार्थे करिने अतिथिने संतोष पमाडवा ए आदिक धर्म ते गृह
स्थनो कह्यो ॥ ११२ श्लोक साधोश्च कोऽपि कथितो ऽत्र वानप्रस्थस्य धर्मो वनवासरूपः ॥ स्त्रीव्ये
त्रुयत पंचतपाः जले च वासा दिशि रोश्वर भक्तिपूर्वः ॥ ११२ अर्थ ॥ हे गुरो वानप्रस्थनो धर्म ते कुं
ण जांणवो ए प्रश्न छे ॥ २०९ उत्तर वनने विषे निवास करवो तथा कंनाळाने विषे च्यार पड रवे च्या
र अग्निनि धुंणि युं करविने पांचमो सूरज ए पंचाग्नि ये करिने तप करवुं तथा शियाळाने विषे
जळमां बेसवुं तथा परमेश्वरनि भक्ति करवी ए पंचाग्नि ये के आदिक धर्म जे ते वानप्रस्थनो
जांणवो ॥ ११३ श्लोक ॥ सांन्यासिधर्मो भवतीरितः को दिवेक वारात्र नमिरा भक्तो ॥ परायणो यो ऽ
थिति निसेवने सपणो विनैकत्रय थोपदेश्राम ॥ ११३ अर्थ ॥ हे गुरो संन्यासिनो धर्म ते कुण जांण
वो ए प्रश्न छे ॥ २१० उत्तर ॥ दिवसमां एकवार जमवुं तथा नारायणनि भक्ति परायण थवुं तथा

वर्षाऋतु विना एक स्थानक मां रेवुं नहि ए आदिक धर्म जे ते संन्यासिनो जांणवो ॥ ११४ श्लोक ॥
के पुरुषास्तीर्थफलं लभंते जितेंद्रियाः पापभियोप्यदंभाः ॥ अकोपनाः सत्संगिरो विमुक्ताः
संगोः समेरास्तीकबुद्धिमंतः ॥ ११४ ॥ अर्थः हे गुरो किया पुरुष जे ते तीर्थना फळने पांमे
छे ए प्रश्न छे ॥ २११ उत्तर ॥ जितेंद्रिय तथा पाप थकि बिता होय तथा असंत क्रोधी न होय तथा
साचुं बोलनारा तथा असत प्रसंगना संगे रहित होय तथा आस्तिक मतिवाळा होय ए कह्या
ए गुणे युक्त जे पुरुष होय ते ते तिर्थना फळने पांमे छे ॥ ११५ श्लोक ॥ न के जना स्तीर्थफलं ल
भंते ये दांभिका नास्तिकहेतुनिष्ठाः ॥ अश्रद्दधानाः पिशुनाश्च पापाः क्रूराश्चलुब्धा अजितें
द्रियाये ॥ ११५ ॥ अर्थ ॥ हे गुरो केवा पुरुष होय ते तिर्थना फळने न पांमे ए प्रश्न छे ॥ २१२ उत्तर ॥
नु परथि मारा ळागे ने मांहि ळकोर तो भुंडा होय तथा नास्तिक होय तथा तीर्थने विषे विश्वास र
हित होय तथा श्रद्धाहिन होय तथा चाडि ना करनारा होय तथा पापि होय तथा क्रूर स्वभाववाळा
होय तथा अति मेलो भि होय तथा अजितेंद्रिय होय के तां परस्त्री आदिकने विषे इंद्रियुं नेहूरं

मेलनाराणवाजेपुरुषतेजेतेतिर्थनाफलनेनक्षिपामता ॥ ११५ श्लोक ॥ शब्दस किंलक्षणामर्थ
मात्राऽऽश्रयःसमस्तमव्यवहारहेतुः ॥ जातिस्वरूपादिकस्फुकलंवस्तुनभस्थात्वमम्पृष्यमात्रा ॥
११६ ॥ अर्थ हेगुरुशब्दनुंस्युंलक्षणछेएप्रश्नछे ॥ २१३ ॥ उत्तर ॥ अर्थमात्रनुंआश्रयपणुंनेसर्व
अव्यवहारनुहेतुंपणुंनेवोलनारानोजातिस्वरूपआदिकनुंजाणाविदेवापणुंनेआकत्रानेवी
धेरेवापणुंनेआकाशनीमात्रापणुंतेतेशब्दनुंलक्षणछे ॥ ११६ श्लोक ॥ स्पर्शस्यकिंलक्षणांमें
ष्मपशैसकाठिमकोमलम्मयंतदेवत्वगिंद्रियग्राहकलाऽनिलस्यमात्रात्वमेतद्भवती ॥ तिवेद्यम
११७ ॥ अर्थ ॥ हेगुरुस्पर्शनुंस्युंलक्षणछेएप्रश्नछे ॥ २१७ ॥ उत्तर उष्णपणुंनेशीतलपणुंनेकठणपणुं
नेकोमलपणुंनेत्वचाइंद्रियेकरिनेग्रहणकरवापणुंनेवायुनुमात्रापणुंएस्पर्शनुंलक्षणछे
११७ श्लोकः रूपस्यकिंमुचितसर्ववस्त्वाकृतित्वमात्तुषगोचरत्वंतस्याग्नितत्वमेतऊचनादव
स्थांतरत्वलघिमस्वपदंवकार्यं ॥ ११८ ॥ अर्थ ॥ हेगुरुरूपनुस्युंलक्षणछेएप्रश्नछे ॥ २१५ ॥ उत्तर स
र्वेपदार्थमात्रनाआकारनुंजणाविदेवापणुंनेसर्वेपदार्थनेविषेगौणपणोकरीनेरहेवापणुंनेदेशने

काळनेक्रियानेजातिनेगुणतेमनेजोगेकरिनेअनेकअवस्थानेपांमवापणुंनेनेत्रेकरिनेग्रह
णकरवापणुंनेतेजनुमात्रापणुंएरूपनुंलक्षणजांणवुं ॥ ११८ ॥ श्लोकः रसस्यकिंलक्षणमंबुमात्रा
जिह्वेंद्रियैगोचधारणत्वम ॥ माधुर्यतीक्ष्णकषायकक्षारलमम्लत्वकटुत्वमेतत ॥ ११९ ॥
अर्थ हेगुरुरसनुंस्युंलक्षणछेएप्रश्नछे ॥ २१६ ॥ उत्तर जलनुमात्रापणुंनेमाधुर्यपणुंनेतीखवापणुंने
कषायलापणुंनेखारापणुंनेखाटापणुंनेकडवापणुंनेजिह्वाइंद्रियेकरिनेग्रहणकरवापणुंए
रसनुंलक्षणछे ॥ ११९ ॥ श्लोक गंधस्यकिंलक्षणमित्थमुर्वीमात्रत्वमस्मास्फुटमस्तिवाथ
सुगंधदुर्गंधमयत्वमेवघ्राणेंद्रियेणग्रहणत्वमेतत ॥ १२० ॥ अर्थ ॥ हेगुरुगंधनुंस्युंलक्षणछेएप्रश्न
छे ॥ २१७ अर्थ पृथ्विनुमात्रापणुंनेसुगंधपणुंनेदुर्गंधपणुंनेघ्राणइंद्रियेकरिनेग्रहणक
रवापणुंएजेतेगंधनुंलक्षणजांणवुं ॥ १२० ॥ श्लोक भूलक्षणंकिंवपुषांप्रसूत्वंयतमातिनांस्थाव
रजंगमानाम ॥ तल्लौकमतातनुभृद्वरस्वादेश्चतुष्कस्यविभागभाक्त्वम ॥ १२१ ॥ अर्थ ॥ हेगुरुपृ
थ्विनुंलक्षणतेकुंणछेएप्रश्नछे ॥ २१८ ॥ उत्तर स्थावरजंगमप्राणिमात्रनाशरीरनुंप्रसववाप

प्र०२। २०

णुंनेलोकेकरिरैनेस्थानकपणुंनेदेहधारीमात्रनेधरिरवापणुंनेआकाशादिकच्यारभूतनीवि
भागकरवापणुंएपृथ्वीनुंलक्षणजाणवुं॥१२१॥श्लोक किंकर्मचकृपृथ्व्या विमुखवस्तुऊर्ध्वमपी
डिकरणंबहुत्वम॥आर्द्रत्वतृप्तिमृदुत्वहेतुः मूर्त्ततापहत्वंरूपजीवकत्वम॥१२२॥अर्थ हे गुरो
जलनुंस्युंलक्षणछेएप्रश्नछे॥२२५॥उत्तर॥पृथ्वीआदिकद्रव्यनुंपिंडीभावकरवापणुंनेपृथ
वीथकिबहुपणुंनेआर्द्रकरवापणुंनेतृप्तिकरवापणुंनेमृदुतानुंहेतुपणुंनेतरषानितापनुं
हरवापणुंनेप्राणिमात्रनुंजीवाडवापणुंएजलनुंलक्षणजाणवुं॥१२२॥श्लोक कस्तेजसोंकःपच
नप्रकाशपानरसादेस्तृषाक्षुधात्वम॥काष्ठादिभस्मीकरणंविशुद्धकृत्ताशनंशीतहरत्वमे
तम॥१२३॥अर्थ हे गुरोतेजनुंलक्षणतेकुंणजाणवुंतेप्रश्नछे॥२२६॥उत्तर पचाववापणुंनेप्रका
शपणुंनेरसादिकनुंरुपांनकरवापणुंनेक्षुधापणुंनेतृषापणुंनेकाष्ठादिकनुंभस्मकरवाप
णुंनेशुद्धकाविनाखवापणुंनेकृतद्रव्यनुंआशनकरवापणुंनेशीतनेहरवापणुंएतेजनुंलक्ष
णजेतेजाणवुं॥१२३॥श्लोक॥ किंवायुंरूपेतृणपत्रकादेर्येर्मेलनंचालनकंपमादेः॥ज्ञानेंडि

य्यादिप्रतिनित्यभावःशब्दादिकानांवचयात्मतेतत॥१२४॥अर्थ हे गुरोवायुनुंस्युंलक्षणछे
२२७॥उत्तर तृणपर्णआदिकनुंमेलुकरवापणुंनेवृक्षादिकनेकंपाववापणुंनेशब्दादिक
पंचविषयनुंज्ञानेंद्रियादिप्रत्येपमाडवापणुंनेइंद्रियनुंआत्मापणुंएवायुनुंलक्षणजाणवुं
१२४॥श्लोक किंव्योमरूपंसकलस्यजंतोरंतर्बहिरप्रसममयेकत्वम॥प्राणेंद्रियांतःकरणात्मघो
ष्मंवाय्वादिषुमापकताचतुष्षु॥१२५॥अर्थ हे गुरोव्योमनुंलक्षणतेकुंणछेएप्रश्नछे॥२२८
सर्वजीवमात्रनेदेहनिमाहिलिकोरनेदेहनीबारलिकोरअवकाशदेवापणुंनेप्राणइंद्रियुंअं
तःकरणएसर्वेनुंस्थानकपणुंनेवायुआदिकच्यारभूतनेविषेव्यापकपणुंएजेतेव्योमनुंल
क्षणजाणवुं॥१२५॥श्लोकः कस्मात्कारणाद्धेतुःकथितोलौकिकोवानारायणोमानुषमूर्त्तिविभ्रत॥त
स्यात्तदेकांतिकभक्तःआप्यप्रतिष्ठितात्मप्रतिमात्मनापि॥१२६॥अर्थः हे गुरोकस्मात्कारणनाहेतुतेकुं
णछेएप्रश्नछे॥२२९॥उत्तर॥मनुष्यसरखिमूर्त्तिनेधरतारावाजेनारायणएतेजेतेकस्मातना
हेतुछेतथातेनारायणनोएकांतिकभक्तवाजेभक्ततथातेनारायणतेमणेप्रतिष्ठानेकरीताव

प्र०टी० ३१

जेपोतानिप्रत्तिमाराविषयमांकल्याणनाहेतुछे ॥ १२६ ॥ श्लोक ॥ श्रेवैर्भक्तिकराश्रितैः परिमीतैर
मुत्तमैसोत्तरैर्योगानंदसमाह्वयेनमुनिनासंदर्भितोयंमया ॥ तंप्रश्नोत्तरसागरंचपठतांवा
श्रृण्वतांसादरंतेषांश्रीहरिरिशितास्तुपरिसंप्रितोभविष्यसंसे ॥ १२७ ॥ अर्थ ॥ उत्तरेसहितएवा
नेअतिशेउत्तमएवाजे ॥ १२३ ॥ उत्तर ॥ वसेनेत्रेविशप्रश्नतेमणेकरिनेकृयोगानंदमुनितेणेकर्यो
तवोजेआप्रश्नोत्तरसागरग्रंथतेनेआदरेकरिनेभणनारानेसांभळनाराएवाजेजनतेमनाउ
परश्रीप्रसन्नपुरुषोत्तमसर्वेनीयंताएवाजेश्रीहरितेजेतेवकुप्रसन्नथासे ॥ १२७ ॥ उत्तर
श्रीजपप्रकृतेः परंचपुरुषात्स्वंब्रह्मधामास्तियस्तस्मिन्दिव्यतनुः ॥ सदाविजयतेश्रीभक्ति
धर्मात्मजः योंतर्यामितयास्थितोस्त्वगणितब्रह्मांडजीवेषुचश्रीस्वामिसहकलेश्वरससहजानंदः प्रस
न्नोस्तुमे ॥ १२८ ॥ अर्थ ॥ दिव्यशोभायेजुक्तएवुंनेदिव्यसंमृद्धियेजुक्तएवुंनेप्रकृतिनेपुरुषतेथकि
परएवुंजेपोतानुंअक्षरधामतेनेविषेदिव्यमूर्त्तिथकाकाळसर्वेकाळनेविषेसर्वोत्क
र्षपणेकरिनेजेविराजमानछेएवानेअसंख्यब्रह्मांडुनाजीवुंनेविषेकर्मफळनाप्रदकोना

करवानेअर्थेअंतर्यामिरूपेकरिनेजेरह्याएवानेयंत्नासवाजेश्रीभक्तिधर्मात्मजस
हजानंदस्वामितेजेतेमाराउपरप्रसन्नथाओ ॥ १२८ ॥ श्लोक ॥ श्रीकृष्णांघ्रिसरोजसौरभा
भरास्वादादरादानताज्ञाताऽऽनंदमहार्णवोर्मिमयमग्नस्वांतभृंगावलयः धर्माळंकृत
विग्रहात्कलजनाऽज्ञानांधकारार्कतेमुक्तानंदमुखाजितेंद्रियचयाः संतःप्रसिदंतुमे ॥
१२९ ॥ इतिश्रीधर्मधुरंधरवर्यप्रकृतिपुरुषोत्तमश्रीसहजानंदस्वामिशिष्ययोगानंदमुनिविरचि
तः प्रश्नोत्तरसागरः समाप्तः ॥ अर्थ ॥ श्रीकृष्णभगवाननाजेअंघ्रिसरोजतेनोसौरभजे
सुगंधसमूहतेनोजेआस्वादतेनुंआदरेकरिनेजेग्रहणकरवुंतेथकिनतपणंपाम्यागएवाजेआ
नंदरूपमहार्णवतेनाजेतरंगतेतरंगुनेविषेनिमग्नथईगयुंछेमनरूपभ्रमरावलिपंक्तिपुं
तेजेमनेनियुंएवानेधर्मेकरिनेअलंकृतछेदेहजेमनाएवानेहरिलिधुछेमनुष्यनुंअज्ञा
नरूपअंधकारतेजेमणेएवानेजित्योछेइंद्रियुनोसमूहतेजेमणेएवोजेमुक्तानंदस्वामि
आदिकसत्पुरुषतेजेतेमारिउपरअतिप्रसन्नथाओ ॥ १२९ ॥ इतिश्रीसहजानंद
स्वामिशिष्ययोगानंदमुनिकृतबालबोधप्रश्नोत्तरसागरप्राकृतटिकासमाप्ता ॥ ॥